



JPSC

State Civil Services

**Jharkhand Public Service Commission
(Preliminary & Main)**

पेपर - 3B भाग - 2 & 3

भारत का भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन





संस्करण – जनवरी, 2024

कॉपीराइट © 2024 **SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD.**

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति बिना प्रस्तुत या वितरित या किसी भी तरह से जिसमें फोटोकॉपी या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल तरीके शामिल हैं, में प्रेषित नहीं हो सकता है। किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ या संशोधन करना कॉपीराइट कानूनों का उल्लंघन होगा और कानूनी कार्यवाही के लिए उत्तरदायी होगा। सम्पादक का नैतिक अधिकार प्रमुख किया गया है। यह SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD. के द्वारा मुद्रित किया गया है।

किसी भी प्रकार की समस्याओं, सुझावों और फीडबैक के लिए सम्पर्क करें :-

hello@toppersnotes.com

मुख्य कार्यालय – टॉपर्सनोट्स
SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD.
H-176, ओसवाल फैक्ट्री के पास,
मालवीय नगर इंडस्ट्रियल एरिया,
मालवीय नगर, जयपुर,
राजस्थान-302017

मूल्य – 999 / –

Website- www.toppersnotes.com
Email- hello@toppersnotes.com
Phone – 9614-828-828

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
भारत का भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन		
1.	भारत की स्थिति और विस्तार	1
2.	भारत की भू-गर्भिक संरचना और चट्टान प्रणाली	3
3.	भारत के भौगोलिक प्रदेश	11
4.	भारत का अपवाह तंत्र	45
5.	भारत की जलवायु	88
6.	जल प्रबंधन	109
7.	भारत में मृदा के प्रकार	120
8.	कृषि	126
9.	भारतीय वन एवं वन्यजीव	145
10.	जैव विविधता संरक्षण	155
11.	भारत में ऊर्जा संसाधन	190
12.	भारत में खनिज संसाधन	208
13.	भारत के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र	215
14.	भारत में परिवहन	224

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

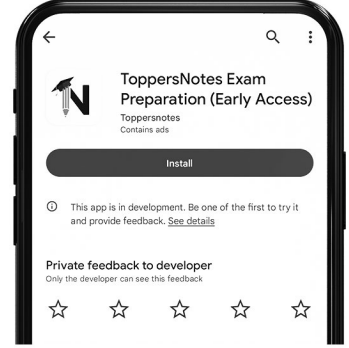
नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करें।
ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखें :-



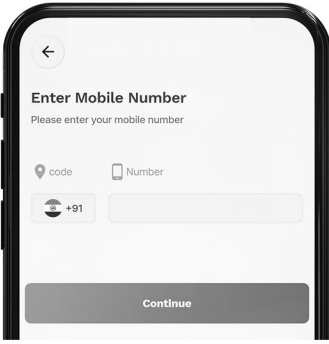
ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।



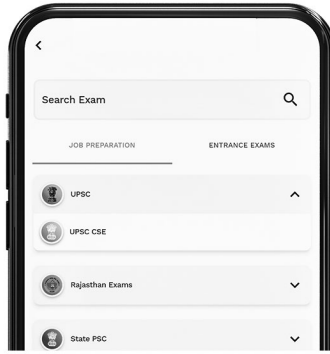
टॉपर्सनोट्स
एग्जाम प्रिपरेशन ऐप



टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।



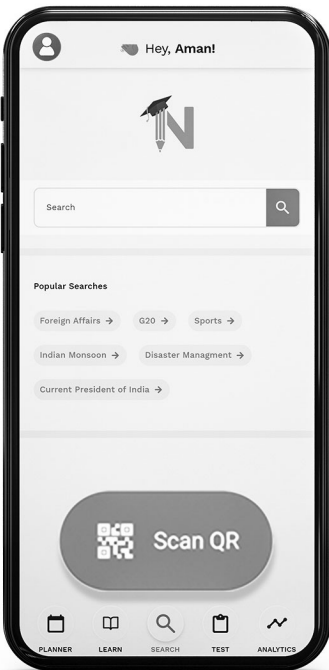
लॉग इन करने के लिए अपना मोबाइल नंबर दर्ज करें।



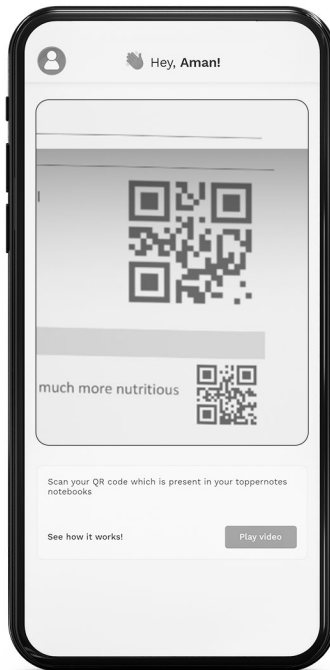
अपनी परीक्षा श्रेणी चुनें।



सर्च बटन पर क्लिक करें।



SCAN QR पर क्लिक करें।



किताब के QR कोड को स्कैन करें।



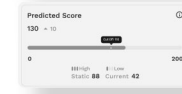
• सोल्युशन वीडियो
• डाउट वीडियो
• कॉन्सेप्ट वीडियो



• अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

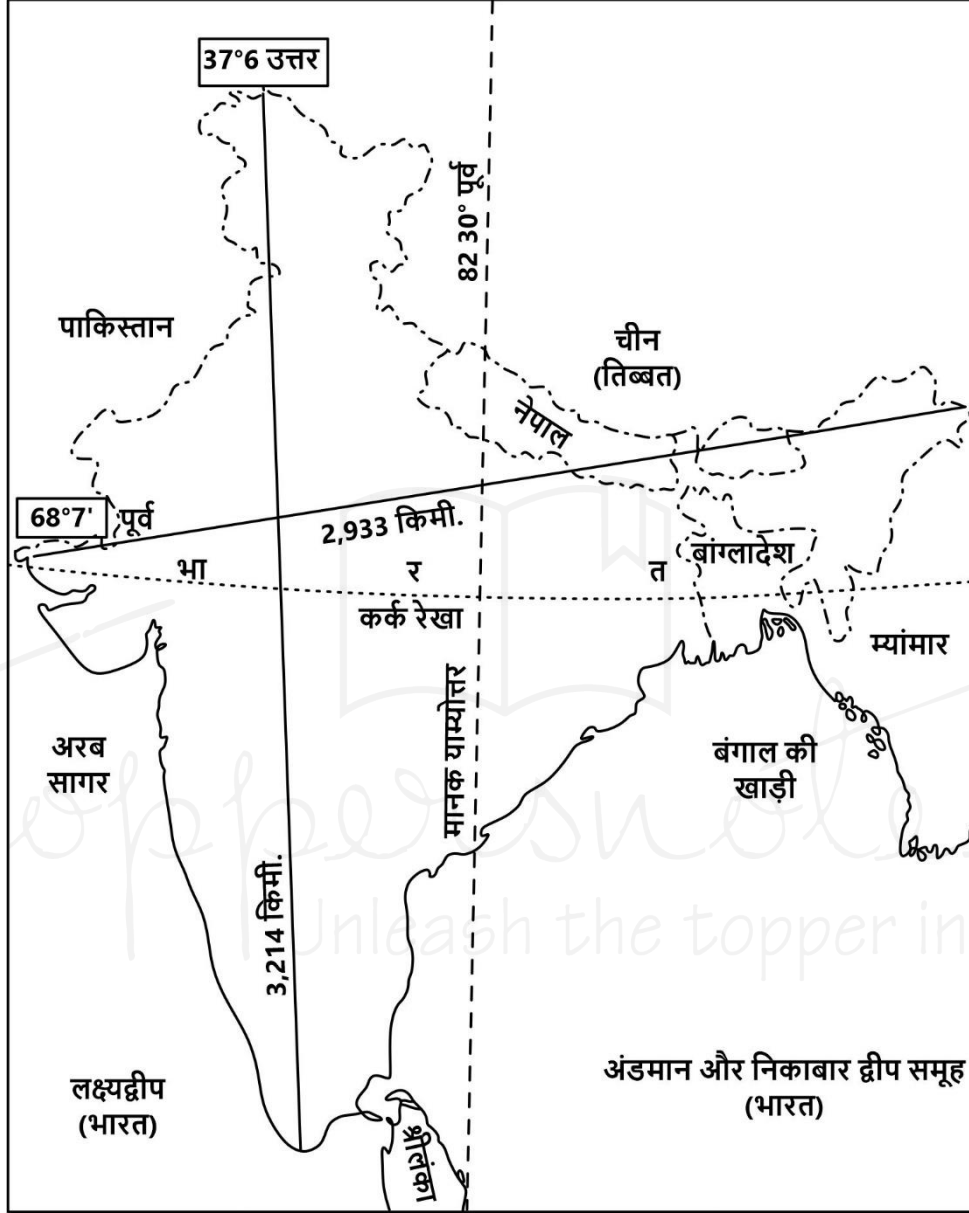


• विषयवार अभ्यास
• कमजोर टॉपिक विश्लेषण



• रैंक प्रेडिक्टर
• टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या [766 56 41 122](tel:7665641122) पर whatsapp करें।



भारत - विस्तार एवं मानक समय रेखा

- उत्तरी गोलार्ध में स्थिति (8°4' उत्तर से 37°6' उत्तर अक्षांश ; 68°7' से 97°25' पूर्वी देशांतर)
- सीमाएं :
 - उत्तर: महान हिमालय
 - पश्चिम: अरब सागर
 - पूर्व: बंगाल की खाड़ी
 - दक्षिण: हिंद महासागर।
- विश्व का 7वां सबसे बड़ा देश।
- सबसे उत्तरी बिंदु : इंदिरा कोल
- सबसे दक्षिणी बिंदु: अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में इंदिरा पॉइंट।
- सबसे पूर्वी बिंदु: अरुणाचल प्रदेश के अंजॉ जिले में किबिथू के पास
- पश्चिमीतम बिंदु: कच्छ में सर क्रीक, गुजरात में "गौहर माता " के पास।
- लंबाई: 3214 किमी
- चौड़ाई: 2933 किमी (अनुदैर्घ्य अंतर: 30° या 2 घंटे)
- क्षेत्रफल: 32,87,263 वर्ग किमी (दुनिया का 2.42%)

- **जनसंख्या:** विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश (विश्व की जनसंख्या का 17.5%)
- **कुल भूमि सीमा** = 15,200 किमी।
- **कुल समुद्री सीमा** = 7516.5 किमी (बिना द्वीपों के 6100 किमी)

सीमावर्ती देश

- **उत्तर-पश्चिम:** अफगानिस्तान और पाकिस्तान
 - भारत-पाकिस्तान सीमा: **रेडक्लिफ रेखा**
 - पाकिस्तान-अफगानिस्तान सीमा: **डूरंड रेखा।**
- **उत्तर:** चीन, भूटान और नेपाल
 - भारत-चीन सीमा: **मैकमोहन रेखा।**
- **पूर्व:** म्यांमार, बांग्लादेश (भारत की बांग्लादेश के साथ सबसे लंबी सीमा है)
- **दक्षिण:** पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाड़ी के माध्यम से श्रीलंका से अलग।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करने वाले राज्य

- **बांग्लादेश:** कुल सीमा = 4096 किमी

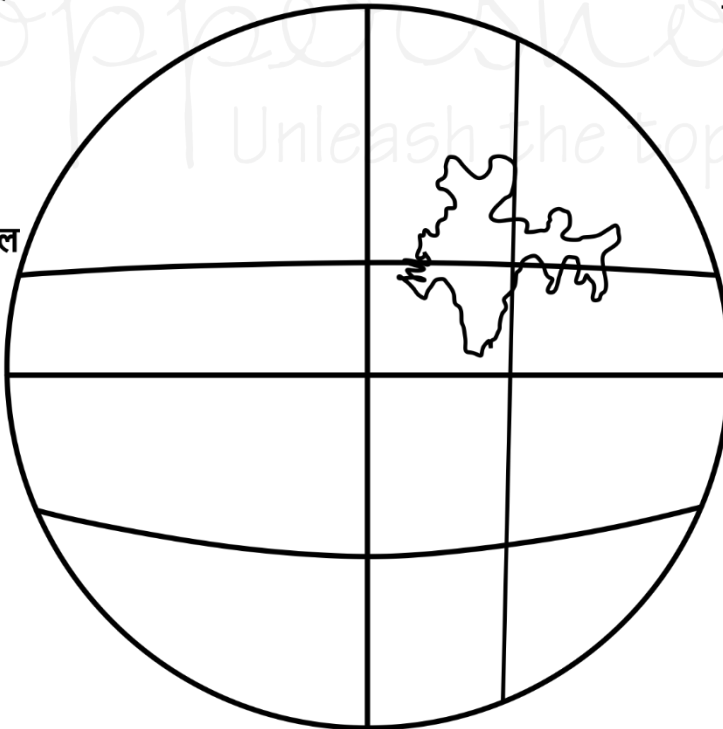
- **5 राज्य:** पश्चिम बंगाल, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा और असम
- **चीन:** कुल सीमा = 3488 किमी
 - **4 राज्य** और 1 केंद्र शासित प्रदेश: हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम और लद्दाख
- **पाकिस्तान :** कुल सीमा = 3323 किमी
 - **3 राज्य** और 2 केंद्र शासित प्रदेश: जम्मू और कश्मीर, पंजाब, गुजरात, राजस्थान और लद्दाख
- **नेपाल:** कुल सीमा = 1751 किमी
 - **5 राज्य:** उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, सिक्किम, पश्चिम बंगाल
- **म्यांमार:** कुल सीमा = 1643 किमी
 - **4 राज्य:** अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम और नागालैंड
- **भूटान:** कुल सीमा = 699 किमी
 - **4 राज्य:** अरुणाचल प्रदेश, असम, सिक्किम और पश्चिम बंगाल
- **अफगानिस्तान:** कुल सीमा = 106 किमी
 - **1 केंद्र शासित प्रदेश:** लद्दाख

भारतीय मानक मध्याह्न रेखा:

राज्य जहाँ से कर्क रेखा गुजरती है:

1. गुजरात
2. राजस्थान
3. मध्य प्रदेश
4. छत्तीसगढ़
5. झारखण्ड
6. पश्चिम बंगाल
7. त्रिपुरा
8. मिजोरम

82.5°E भारतीय मानक रेखा



राज्य जहाँ से भारतीय मानक रेखा गुजरती है

1. उत्तर प्रदेश
2. मध्य प्रदेश
3. छत्तीसगढ़
4. ओडिसा
5. आंध्र प्रदेश

23.5°N कर्क रेखा (8 राज्य)

23.5°S मकर रेखा

- भारत की मानक रेखा 82°30'E देशांतर है जो उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर से होकर गुजरती है ।
- इस पर भारत का मानक समय आधारित है जो ग्रीनविच मानक समय रेखा से 5 घंटे 30 मिनट आगे है ।

- कर्क रेखा - (23°30'N) गुजरात , राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल , मिजोरम, और त्रिपुरा से गुज़रती है।



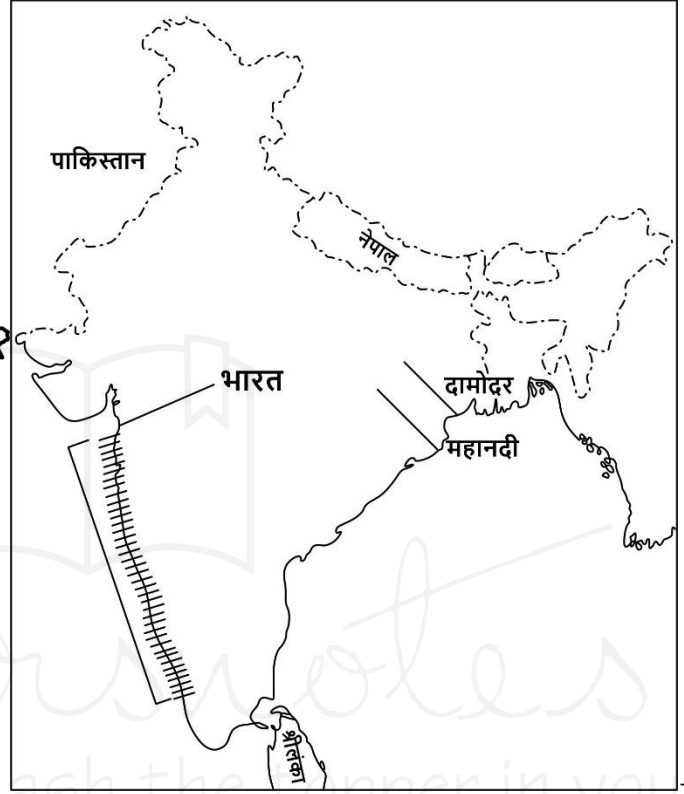
2

CHAPTER

भारत की भू-गर्भिक संरचना और चट्टान प्रणाली

भारत की भू-गर्भिक संरचना का इतिहास

- प्रीकैम्ब्रियन युग



- प्रायद्वीपीय भारत (सबसे पुराना क्रस्टल ब्लॉक) के निर्माण के कारण:
 - 3 प्रोटो महाद्वीपों की टक्कर: अरावली, धारवाड़, सिंहभूम प्रोटो महाद्वीपों की टक्कर के कारण गठित
 - 3 विशिष्ट आकृतियों का गठन: नर्मदा, सोन और गोदावरी
 - प्रोटोकॉन्टिनेंट की भुसन्नति का मुड़ना: अरावली, विंध्य, सतपुड़ा, पूर्वी घाट, बिजावल की पहाड़ियों का निर्माण
- पुराजीवी महाकल्प (Paleozoic Era)
 - भारत - गोंडवाना लैंड का हिस्सा
 - दामोदर और महानदी का भ्रंशन
 - जंगल का जलमग्न होना: कोयले के भंडार का निर्माण
 - पश्चिमी तट दरारित हुआ

- मध्यजीवी महाकल्प (Mesozoic era)

- भारतीय प्लेट उत्तर की ओर खिसकने लगी
- रीयूनियन हॉटस्पॉट में गतिविधि
- दक्कन ट्रैप का निर्माण

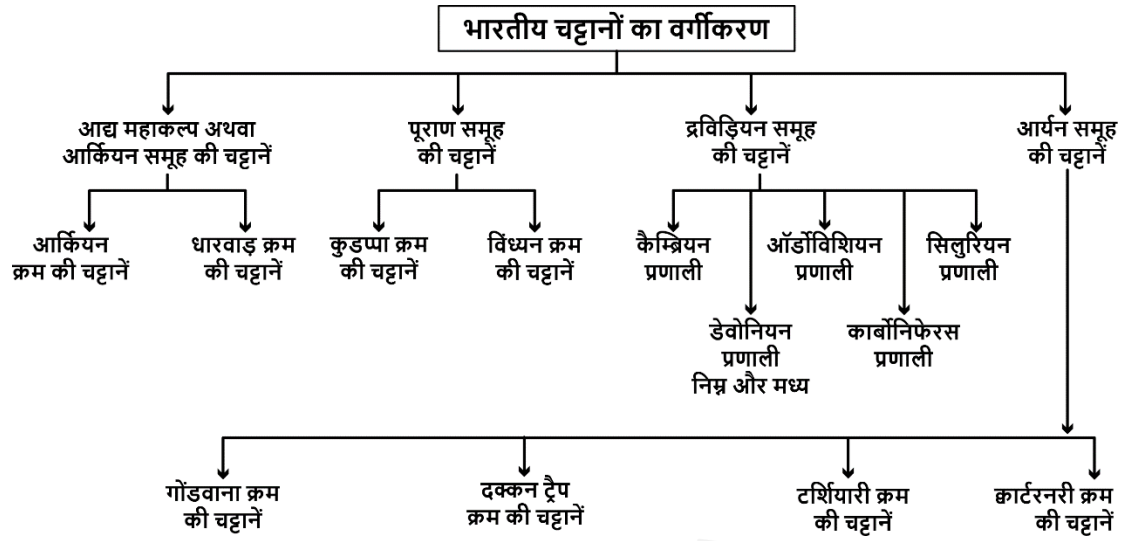
- सीनोजोइक महाकल्प (Cenozoic era)

- तृतीयक अवधि: भारतीय और यूरेशियन प्लेट का टकराव = हिमालय का निर्माण
 - इयोसीन: वृहत हिमालय
 - मियोसीन: लघु हिमालय
 - प्लियोसीन: शिवालिक
- पश्चिमी तट का जलमग्न होना - पश्चिमी घाट का निर्माण
- भारतीय प्लेट का झुकना - नदियों का पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाह

- चतुर्थ कल्प (Quaternary Period)

- उत्तरी भारतीय मैदान का निर्माण (नदियों द्वारा निक्षेपण)

भारत की चट्टान प्रणाली (Rock System of India)



A. आर्कियन क्रम की चट्टानें

प्रारंभिक प्रीकैम्ब्रियन युग

- भारतीय क्रेटन (गोंडवानालैंड के भारतीय उपमहाद्वीप का ब्लॉक) का मूल रूप।



विशेषताएं:

- भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे पुरानी चट्टान प्रणाली
- यह तब बनता है जब मैग्मा जम जाता है = कोई जीवाश्म (एज़ोइक) मौजूद नहीं होता है, क्रिस्टलीय होता है और इसमें शीट जैसी परतें (पत्तेदार) होती हैं।
- नाइस (ग्रेनाइट, गैब्रो आदि) और शिस्ट (अभ्रक, क्लोराइट, तालक आदि) मौजूद होते हैं।
- बुंदेलखंड नाइस सबसे पुराना है।

- **खनिज:** लोहा, मैंगनीज, तांबा, बॉक्साइट, सोना, सीसा, अभ्रक, ग्रेफाइट आदि।
- **वितरण:** अरावली पहाड़ियाँ और राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग, दक्कन का पठार, भारत का उत्तर-पूर्व, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, ओडिशा, झारखंड में छोटानागपुर पठार
- दो प्रणालियाँ-
 1. **आर्कियन नाइस और शिस्ट:**
 - **बंगाल नाइस**
 - कोरापुट और बलांगीर जिले में खोंड जनजातियों के नाम पर खोंडोलाइट्स के नाम से भी जाना जाता है
 - सबसे पहले पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर (मिदनापुर) में मिला।
 - वितरण: झारखंड के पूर्वी घाट, ओडिशा, मानभूम और हजारीबाग जिले; आंध्र प्रदेश का नेल्लोर जिला; तमिलनाडु का सलेम जिला; सोन घाटी, मेघालय पठार और मिकिर पहाड़ियाँ।
 - **बुंदेलखंड नाइस**
 - विशेषताएं
 - ✓ मोटे दाने वाला, ग्रेनाइट जैसा दिखता है।
 - ✓ क्वार्ट्ज नलिकाओं वाली क्रॉस-क्रॉस संरचना।
 - ✓ वितरण: बुंदेलखंड (यूपी), बघेलखंड (एमपी), महाराष्ट्र, राजस्थान, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु।
 - **नीलगिरि नाइस (उर्फ चारनोकाइट श्रृंखला; जेम्स चार्नाक के नाम पर)**
 - विशेषताएं
 - ✓ प्लूटोनिक चट्टान
 - ✓ नीले-भूरे से गहरे रंग की चट्टान

- ✓ मध्यम से मोटे दाने वाली संरचना।
- ✓ वितरण: दक्षिण आरकोट, पालनी पहाड़ियाँ, शिवराय/ शेवरोय पहाड़ियाँ, नीलगिरि पहाड़ियाँ।

2. धारवाड़ क्रम की चट्टानें



- विशेषताएं
 - भारत की सबसे पुरानी कायांतरित शैल।
 - आर्कियन क्रम की चट्टानों के क्षरण और अवसादन के परिणामस्वरूप निर्मित
 - ये चट्टानें एजोइक हैं, क्योंकि या तो उनके निर्माण के दौरान प्रजातियों की उत्पत्ति नहीं हुई थी या समय के साथ जीवाश्मों का विनाश हो गया।
- खनिज संरचना: धातु खनिज जैसे लोहा, सोना, तांबा, मैंगनीज आदि।
- वितरण: अरावली, छोटानागपुर पठार, मेघालय, कर्नाटक से कावेरी घाटी तक दक्षिणी दक्कन क्षेत्र, बेल्लारी, शिमोगा के जिले, जबलपुर और नागपुर में सासर पर्वत श्रृंखला और गुजरात में चंपानेर पर्वत श्रृंखला, लद्दाख, जास्कर, गढ़वाल और कुमाऊं की हिमालय श्रृंखला में और असम पठार की श्रृंखला।
- क्षेत्र और धातु मात्रा के आधार पर विभिन्न श्रृंखलाओं का वर्गीकरण:
 - अतिरिक्त प्रायद्वीपीय भारत में:
 - ✓ राजस्थान श्रृंखला
 - ✓ वैकरतता श्रृंखला:
 - ☞ कुमाऊं और स्पीति;
 - ☞ स्लेट, शिस्ट, डोलोमाइट और चूना पत्थर
 - डायलिंग श्रृंखला:
 - ✓ सिक्किम और शिलांग;
 - ✓ आग्नेय घुसपैठ के संकेत; कार्टजाइट, फाइलाइट, हॉर्नब्लेंड शिस्ट।
 - प्रायद्वीपीय भारत में:
 - ✓ चैपियन श्रेणी:

- ☞ मैसूर के कोलार गोल्ड फील्ड में चैपियन रीफ के नाम पर;
- ☞ विस्तार: मैसूर के उत्तर पूर्व तथा बेंगलुरु के पूर्व से कर्नाटक के कोलार तथा रायचूर तक है।

☞ भारत के सबसे अधिक सोना यहीं से प्राप्त किया जाता है।

■ चम्पानेर श्रेणी:

- ✓ विस्तार: गुजरात के बड़ोदरा के आस-पास अरावली प्रणाली का बाहरी विस्तार
- ✓ इस श्रेणी में संगमरमर की बहुलता तथा हरे रंग के आकर्षक संगमरमर पाए जाते हैं।
- ✓ इसके अतिरिक्त चुना पत्थर, स्लेट, कार्टज, इत्यादि पाए जाते हैं।

■ शिल्पी श्रेणी:

- ✓ विस्तार: मध्य प्रदेश के बालाघाट और छिंदवाड़ा जिलों के कुछ हिस्सों में विस्तृत है।
- ✓ ग्रिट, फ़ाइलाइट, कार्टजाइट, हरे पत्थरों और मैग्नीफेरस चट्टानों में समृद्ध

■ क्लोज़पेट श्रेणी:

- ✓ विस्तार: मध्य प्रदेश के बालाघाट और छिंदवाड़ा में फैला है।
- ✓ इसमें कार्टज, तांबा- के पाइराइट और मैग्नीफेरस चट्टाने पाई जाती है।

■ लौह अयस्क श्रेणी:

- ✓ विस्तार: सिंहभूम (झारखंड), बोनाई, मयूरभंज और क्यौंझर जिला (ओडिशा);
- ✓ लौह अयस्क के भंडार में समृद्ध

■ खोण्डोलाइट श्रेणी:

- ✓ विस्तार: पूर्वी घाट के उत्तरी पूर्वी सीमा से दक्षिण में कृष्णा घाटी तक
- ✓ इसमें खोण्डोलाइट, कोइराइट, चारनोकाइट और नाइस प्रमुख चट्टानें पाई जाती है।

■ रायलो श्रेणी:

- ✓ विस्तार: दिल्ली (मजनु का टीला) से लेकर राजस्थान के अलवर तक उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम में फैला हुआ है।
- ✓ इसमें संगमरमर की बहुलता पाई जाती है।
- ✓ मकराना तथा भगवानपुर में उच्च कोटि के संगमरमर की चट्टाने पाई जाती है।
- ✓ इसे दिल्ली श्रेणी भी कहा जाता है।

■ सकोली श्रेणी:

- ✓ विस्तार: मध्य प्रदेश के जबलपुर और रीवा जिलों में है।
- ✓ इसमें अभ्रक, डोलोमाइट, शिष्ट, तथा संगमरमर प्रचुर मात्रा में पाई जाती है।

■ **सौसर श्रेणी:**

- ✓ **विस्तार:** महाराष्ट्र के नागपुर और भंडारा तथा मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में है।
- ✓ इसमें **कार्टज, अभ्रक, शिष्ट, संगमरमर तथा मैग्नीफरेस चट्टानें** प्रचुर मात्रा में है

B. पुराण समूह की चट्टानें

1. **कुडप्पा क्रम की चट्टानें**



● **विशेषताएं:**

- **आर्कियन एवं धारवाड़ की चट्टानों के अपरदन एवं निक्षेपण** से निर्मित
- **प्रकृति: अवसादी;** ये तब बनते हैं जब **तलछटी चट्टानें** जैसे बलुआ पत्थर, चूना पत्थर आदि और **मिट्टी अभिनति वलन में जमा होती रहती है।**
- **आंध्र प्रदेश के कुडप्पा जिले के नाम पर** रखा गया
- **खनिज निक्षेप:** शेल, स्लेट, कार्टजाइट, लौह अयस्क (निम्न गुणवत्ता), मैंगनीज, एसबेस्टस, तांबा, निकल, कोबाल्ट, संगमरमर, जास्पर, और पत्थरों से भरपूर; हालांकि इनकी गुणवत्ता निम्न होती है।
 - सीमेंट ग्रेड **चूना पत्थर के बड़े भंडार** होते हैं
- **वितरण:** आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, दिल्ली, राजस्थान और लघु हिमालय।

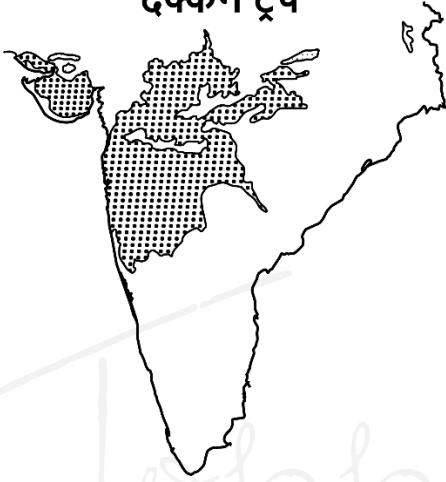
● **प्रायद्वीपीय भारत में:**

राज्य	श्रृंखला	विशेषताएँ
आंध्र प्रदेश	पापघानी श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: पापघानी नदी बेसिन; ● कार्टजाइट, शेल, स्लेट और चूना पत्थर
	चेय्यर श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: चेय्यर नदी बेसिन; ● शेल और कार्टजाइट
	नल्लामलाई श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: नल्लामलाई पहाड़ी; ● कार्टजाइट और शेल
	कृष्णा श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: कृष्णा बेसिन; ● कार्टजाइट और शेल
मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़	बिजावर श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: बिजावर जिला (एमपी) ● बलुआ पत्थर, कार्टजाइट और कुछ ज्वालामुखी चट्टानें, डाइक (हीरे की पैतृक चट्टानें)।
	ग्वालियर श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: ग्वालियर जिला (एमपी); ● शेल, चूना पत्थर, बलुआ पत्थर, कार्टजाइट शेल, हॉर्नस्टोन, जास्पर और मूल ज्वालामुखीय चट्टानों से ढके हुए हैं
	राजपुर श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: छत्तीसगढ़; ● चूना पत्थर, बलुआ पत्थर, कार्टजाइट।
कर्नाटक	कैलागी श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: बीजापुर जिला; ● लौह चट्टानें, कार्टजाइट, शेल
	पाखल श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> ● स्थान: गोदावरी क्षेत्र; ● कार्टजाइट, शेल और सिलिसियस चूना पत्थर

	पेंगंगा श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> • स्थान: पेंगंगा नदी महाराष्ट्र का वर्धा जिला; • चूना पत्थर, शेल और स्लेट
दिल्ली	अजबगढ़ श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> • स्थान: अलवर, दिल्ली और गुड़गांव; • कार्टजाइट और स्लाइट, पेग्माटाइट्स के साथ ग्रेनाइट
	रायलो श्रेणी	<ul style="list-style-type: none"> • स्थान: इंदर (गुजरात) दिल्ली, और अलवर क्षेत्र; • संगमरमर से भरपूर

- **अतिरिक्त प्रायद्वीपीय भारत:**
 - कश्मीर, शिमला और नेपाल हिमालय (पीर पंजाल, रामबन और किशतवाड़, डोगरा)
- 2. **विध्वन क्रम की चट्टानें**

भारत दक्कन ट्रैप



- विंध्य पर्वत के नाम पर तश्तरी के आकार में राजस्थान से बिहार तक फैला हुआ है।
- प्राचीन अवसादी चट्टानें जो आर्कियन आधार पर अध्यारोपित हैं।
- गैर-जीवाश्म चट्टानें और दक्कन ट्रैप से आच्छादित।
- धातुयुक्त खनिजों से रहित
- बड़ी मात्रा में टिकाऊ पत्थर, सजावटी पत्थर, चूना पत्थर, शुद्ध कांच बनाने वाली रेत आदि प्रदान करता है।
- हीरे के खनन वाले क्षेत्र जहां से पन्ना और गोलकुंडा हीरे का खनन किया गया है।
- क्षेत्र और धातु के आधार पर विभिन्न श्रृंखलाओं में विभाजित:
 - **लोअर विंध्य प्रणाली**
 - **सेमरी श्रृंखला:** बिहार की सोन नदी घाटी; बलुआ पत्थर
 - **कुर्नूल श्रृंखला:** कुर्नूल जिला, गुलबर्गा और बीजापुर जिला; चूना पत्थर,
 - **भीमा श्रृंखला:** गुलबर्गा और बीजापुर जिले की भीमा नदी घाटियाँ;

- **मालानी श्रृंखला:** मालानी हिल्स, राजस्थान; रायोलाइट्स और टप्स।
- **ऊपरी विंध्य प्रणाली**
 - **कैमूर श्रृंखला:** बुंदेलखंड, बघेलखंड और कैमूर पहाड़ियाँ; बलुआ पत्थर और शेल।
 - **रीवा श्रृंखला:** रीवा जिला, मध्य प्रदेश; बलुआ पत्थर, शेल, समूह- हीरायुक्त।
 - **भंडार श्रृंखला:** मध्य प्रदेश; बलुआ पत्थर, शेल, समूह- हीरा उत्पन्न करनेवाला
- **अतिरिक्त प्रायद्वीपीय भारत**
 - कश्मीर के **डोगरा स्लेट**,
 - शिमला पहाड़ियों की **चैल और शिमला स्लेट**,
 - पंजाब के **अट्टक स्लेट**
 - कुमाऊं के मध्य हिमालय में चट्टानों की **हैमंता प्रणाली**

C. द्रविड़ियन समूह की चट्टानें (पुराजीवी समूह)

पुराजीवी युग

विशेषताएं:

- इसे विश्व में उच्च गुणवत्ता वाले कोयले के निर्माण के कारण कार्बोनिफेरस रॉक सिस्टम के रूप में भी जाना जाता है।
- हिमालय के अतिरिक्त प्रायद्वीपीय क्षेत्रों और गंगा के मैदान में पाए जाते हैं और प्रायद्वीपीय शील्ड (रीवा में उमरिया) में बहुत कम हैं।
- प्रचुर मात्रा में जीवाश्म।
- शेल, बलुआ पत्थर, क्ले, कार्टजाइट्स, स्लेट्स, लवण, टैल्क, डोलोमाइट, मार्बल आदि पाए जाते हैं।
 - **वितरण:** पीर-पंजाल, हंदवाड़ा, लिह्र घाटी, कश्मीर का अन्नतनाग, हिमाचल प्रदेश का स्पीति, कांगड़ा और शिमला क्षेत्र और उत्तराखंड का गढ़वाल और कुमाऊं
 - उनके निर्माण की अवधि के आधार पर निम्नलिखित में विभाजित:
 1. **कैम्ब्रियन प्रणाली:**
 - कोरल, फोरामिनिफेरा, स्पंज, वर्म्स, गैस्ट्रोपोड्स, ट्रिलोबाइट्स और ब्राचिओपोड्स आदि के जीवाश्म युक्त चट्टानें।
 - **वितरण:**

- ✓ पंजाब की साल्ट मार्ल और सेलाइन श्रृंखला युक्त लवण श्रृंखला (बैंगनी बलुआ पत्थर, हरित शेल)
- ✓ स्पीति क्षेत्र में हैमंता प्रणाली (स्लेट्स, कार्टजाइट, शेल, डोलोमाइट आदि) हैं।
- ✓ कश्मीर घाटी (स्लेट, शल्कित शेल, चूना पत्थर, नरम कार्टजाइट आदि)

2. ऑर्डोविशियन प्रणाली:

- वितरण: लिह्वर घाटी में उत्तरी कुमाऊं-शिमला क्षेत्र
- शेल और गुलाबी कार्टजाइट्स, बलुआ पत्थर शामिल हैं।

3. सिलुरियन प्रणाली:

- वितरण: स्पीति क्षेत्र (शेल, चूना पत्थर, डोलोमाइट)।
- ग्रिसबैक और ज़ास्कर रेंज के रेड क्रिनोइडल चूना पत्थर शामिल हैं।

4. डेवोनियन प्रणाली:

- वितरण: स्पीति, कुमाऊं और कश्मीर के मुथ कार्टजाइट्स।
- ब्राचिओपोड्स और कोरल वाला चूना पत्थर पाया जाता है।

5. निम्न और मध्य कार्बोनिफेरस प्रणाली:

- जीवाश्मी चूना पत्थर, शेल और कार्टजाइट।
- माउंट एवरेस्ट ऊपरी कार्बोनिफेरस चूना पत्थर से बना है।
- वितरण: कश्मीर में हिमालयी क्षेत्र (स्पीति में कश्मीर तक विस्तारित)।
- लिपक श्रृंखला (चूना पत्थर और शेल्स का गहरा रंग) और पीओ श्रृंखला (गहरे रंग की शेल्स और कार्टजाइट) के नाम से भी जाना जाता है; लिपक + पीओ = कंवर प्रणाली।

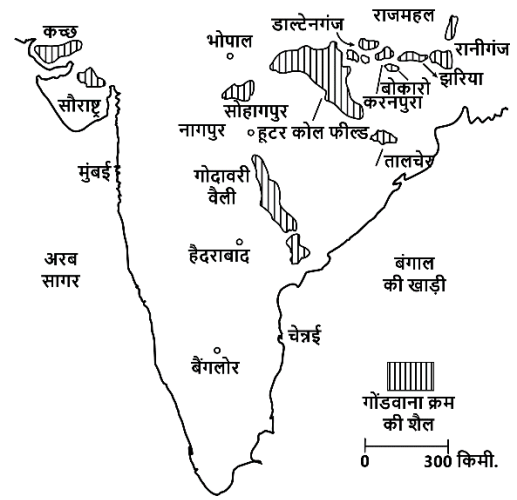
D. आर्यन समूह की चट्टानें

- उच्च कार्बोनिफेरस काल से वर्तमान के समय तक

प्रकार:

1. गोंडवाना क्रम की चट्टानें (मेसीजोइक महाकल्प)

भारत गोंडवाना क्रम की शैल



- इस क्रम की चट्टानों का विकास मेसोजोइक महाकल्प (ट्राइऐसिक, जुरैसिक और क्रिटेसियस) में हुआ है।
- भारत की भूगर्भिक संरचना: समय मापक्रम के अनुसार यह अवधि प्रवर कार्बनीकल से लेकर सिनोजोइक काल तक या आर्यन काल के प्रारम्भ तक मन जाता है।
- गोंडवाना शब्द का विकास मध्य प्रदेश के गोड राज्य से हुआ है जहां सर्वप्रथम इस क्रम की चट्टानों का पता चला था।
- मछलियों एवं रेंगनेनाले जीवों के अवशेष इस क्रम की चट्टानों में पाए जाते हैं।
- भारत का 95% कोयला इसी क्रम की चट्टानों में पाया जाता है।
- वितरण: ये चट्टानें मुख्य रूप से झारखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र में पाई जाती है।
- कार्बोनिफेरस युग में प्रायद्वीपीय भारत में कई दरारों का निर्माण हुआ था। इन दरारों के बीच में भूमि के धसने से बेसिन के आकर को गर्तों का निर्माण हुआ। इसमें उस समय के वनस्पतियों के दबने से कोयले का निर्माण हुआ।
- गोंडवाना क्रम की प्रमुख श्रेणियों को दो वर्गों में रखा जाता है।
 - निम्न गोंडवाना क्रम (तालचेर, दामुदा तथा पंचेत श्रेणी)
 - तालचेर श्रेणी: सबसे पुराने निक्षेप- ओडिशा, राजस्थान
 - ✓ इसमें कोयला सीम/ कोयला-संस्तर, शेल और बलुआ पत्थर शामिल हैं।
 - दामुदा श्रेणी: दामोदर नदी के नाम पर रखा गया; महानदी और गोदावरी नदी घाटियों में पाए गए शैल दृश्यांश; बराकर कोयला क्षेत्र (ग्रिट, बलुआ पत्थर, शेल), गिरिडीह, झरिया कोयला क्षेत्र (करहरबाड़ी चरण), रानीगंज कोयला क्षेत्र (लौह

अयस्क, शेल) के रूप में पाया जाने वाला कोयला-संस्तर शामिल है।

- **पंचेत श्रेणी:** रानीगंज के दक्षिण में पंचेत पहाड़ियों से नामित। निम्न गोंडवाना प्रणाली का सबसे छोटा निर्माण; हरे बलुआ पत्थर वाली चट्टानें, शेल और कोयले से रहित।

○ **ऊपरी गोंडवाना क्रम** (महादेव, राजमहल, जबलपुर एवं उमिया श्रेणी)

- **महादेव श्रेणी:** महादेव पहाड़ियों के नाम पर, सतपुड़ा श्रेणी के महादेव और पचमढ़ी पहाड़ियों में फैली; चट्टानें मिट्टी, बलुआ पत्थर और शैलों से बनी होती हैं।
- **राजमहल श्रेणी:** राजमहल पहाड़ियों के नाम पर; गोदावरी घाटी से राजमहल पहाड़ियों तक प्रायद्वीपीय भारत के पूर्वी तट के उत्तरी भाग की ओर फैला हुआ है;
- **जबलपुर श्रेणी:** सतपुड़ा और मध्य प्रदेश में फैली; सीमित कोयला-संस्तर और लिग्नाइट के साथ बलुआ पत्थर, मिट्टी, चूना पत्थर और शेल से मिलकर बनता है।
- **उमिया श्रेणी:** गुजरात के उमता गांव के पास मिली ऊपरी गोंडवाना शैलें ; बलुआ पत्थर, समूह से मिलकर बनता है।

2. जुरासिक शैल प्रणाली

- पश्चिमी और पूर्वी तटों पर समुद्री भूभाग विस्तार।
- पश्चिम में राजस्थान और कच्छ क्षेत्र और आंध्र प्रदेश के गुंटूर और राजमुंदरी क्षेत्रों में उथला जल जमाव।

- **प्रमुख निक्षेप:** चूना पत्थर, शेल, बलुआ पत्थर आदि।
 - **वितरण:** स्पीति शेल, कुमाऊं की लैटल श्रृंखला, माउंट एवरेस्ट क्षेत्र, गढ़वाल के उप-हिमालय, कच्छ और राजस्थान क्षेत्र
- ### 3. दक्कन ट्रैप (क्रीटेशस प्रणाली)
- मेसोजोइक महाकल्प के अंतिम काल क्रीटेशस से लेकर इयोसीन काल तक प्रायद्वीपीय भारत में ज्वालामुखी क्रिया प्रारंभ हुई थी।
 - इसी दरारी ज्वालामुखी उद्गार के कारण लगभग 5 लाख वर्ग किमी के क्षेत्र में लावा का विस्तार लगभग 3000 मीटर की मोटी परत में हो गया। इसी क्षेत्र को दक्कन ट्रैप के नाम जाना जाता है।
 - इस पठार को ट्रैप कहने के पीछे कारण यह है कि ज्वालामुखी के निक्षेप अर्थात तरल लावा के अलग अलग समय में जमने से सीढ़ीनुमा आकृति बन गई है जो पश्चिम की ओर सबसे ऊँचा है तथा पूर्व और दक्षिण की ओर इसकी ऊंचाई कम होती जाती है।
 - इसका विस्तार गुजरात के कच्छ और कठियावाड़, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के मालवा का पठार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, तेलंगाना तक है।
 - इस क्रम की चट्टानों में बेसाल्ट एवं डोलोमाइट की प्रधानता पाई जाती है। इन्हीं चट्टानों के विखंडन से काली मिट्टी का निर्माण हुआ है जिसे 'कपासी मिट्टी या रेगुर मिट्टी' के नाम से जाना जाता है।
 - उत्तर पश्चिम में लावा की मोटाई सर्वाधिक तथा पूर्व एवं दक्षिण दिशाओं में बढ़ने पर इसकी मोटाई कम होती जाती है।

समूह	स्थान	इंटरट्रैपियन बेड	ज्वालामुखीय राख की परतें
ऊपरी ट्रैप	महाराष्ट्र और गुजरात	उपस्थित	उपस्थित
मध्य ट्रैप	मध्य भारत और मालवा	बहुत दुर्लभ - अनुपस्थित	उपस्थित
निम्न ट्रैप	मध्य भारत और तमिलनाडु	उपस्थित	बहुत दुर्लभ - अनुपस्थित

क्रीटेशस शैल प्रणाली :

- फोरामिनिफेरा क्रीटेशस स्ट्रेटिग्राफी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- चूना पत्थर, बलुआ पत्थर और शेल पाए जाते हैं।
- वितरण: हिमालय पर्वतमाला, मध्य तिब्बत, कश्मीर, अहमदनगर, कच्छ, नर्मदा घाटी, त्रिचिनोपोली/ तिरुचिरापल्ली, अरियालूर और राजमुंदरी क्षेत्र।

4. टर्शियरी क्रम (तृतीयक प्रणाली या सिनोजोइक महाकल्प)

- इस क्रम की चट्टानों का निर्माण सिनोजोइक महाकल्प के इयोसिन युग से लेकर प्लायोसिन युग के बीच हुआ है।
- इसी काल में हिमालय पर्वत का निर्माण हुआ है।
- इयोसीन काल में रानीकोट एवं किरथर श्रेणी की चट्टानों का निर्माण हुआ है। जबकि ओलिगोसीन नारी, गज एवं मुर्री क्रम की चट्टानों का निर्माण हुआ है।

- मुर्री चट्टानों का निर्माण नदी एवं सागर के मिलन स्थल पर हुआ है। जबकि शिवालिक की चट्टानें नदीय है।
- असम, राजस्थान एवं गुजरात में खनिज तेल इयोसिन एवं ओलिगोसीन संरचना में ही पाये जाते हैं। इस काल की चट्टानों में उत्तरी पूर्वी भारत एवं जम्मू-कश्मीर में निम्नस्तरीय कोयले भी पाए जाते हैं। इस संरचना में हिमालय प्रदेश एवं गढ़वाल हिमालय में चूना पत्थर के

भी निक्षेप पाए जाते हैं। इसका विस्तार कश्मीर से असम तक है।

- इसके अलावे पूर्वी एवं पश्चिमी भारतीय तटीय क्षेत्रों में यह संरचना छिटपुट रूप में पाई जाती है।

5. नवजीवी (नूतनमहाकल्प या क्वाटर्नरी) क्रम की चट्टानें

- इसी काल में उत्तर भारत का मैदान अस्तित्व में आया।
- मध्य से लेकर उत्तरी प्लिस्टोसिन काल में पुरानी जलोढ़ मृदा का निर्माण हुआ है। जिसे 'बांगर' के नाम से जाना जाता है।
- जबकि प्लिस्टोसिन के अंत समय से वर्तमान समय के होलोसीन काल तक नवीन जलोढ़ मृदा का निर्माण जारी है। जिसे 'खादर' के नाम से जाना जाता है।
- विशाल मैदान में निक्षेपित तलछटों की गहराई हिमालय की तरफ अधिक तथा प्रायद्वीप पठार की तरफ गहराई कम पाई जाती है। कहीं-कहीं इसकी गहराई 2000 मीटर तक भी पाई जाती है।
- नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, कृष्णा, सतलज नदियों के तटीय क्षेत्रों में इस क्रम के निक्षेप पाए जाते हैं।
- प्लिस्टोसिन काल में कश्मीर घाटी का निर्माण हुआ है। यह घाटी प्रारम्भ में एक झील थी। नदियों द्वारा मलबों के निरंतर निक्षेपन के फलस्वरूप यह मैदान में परिवर्तित हो गया है।
- इसी प्रकार के पर्वतीय झीलों के निक्षेप (नदीय एवं हिमनदीय) को 'करेवा' कहा जाता है। इन्हीं करेवा में जाफ़रान (केशर), पिस्ता बादाम और अखरोट की खेती की जाती है।
- करेवा निक्षेप में बालू, मृत्तिका, दुमट, गाद, गोलाश्म आदि पाया जाता है।

3 CHAPTER

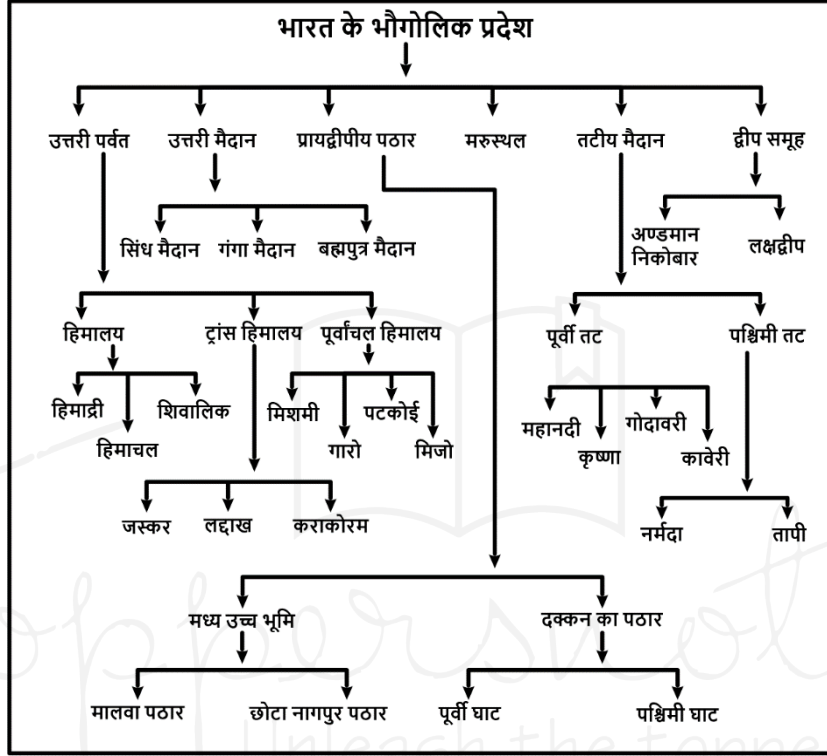
भारत के भौगोलिक प्रदेश



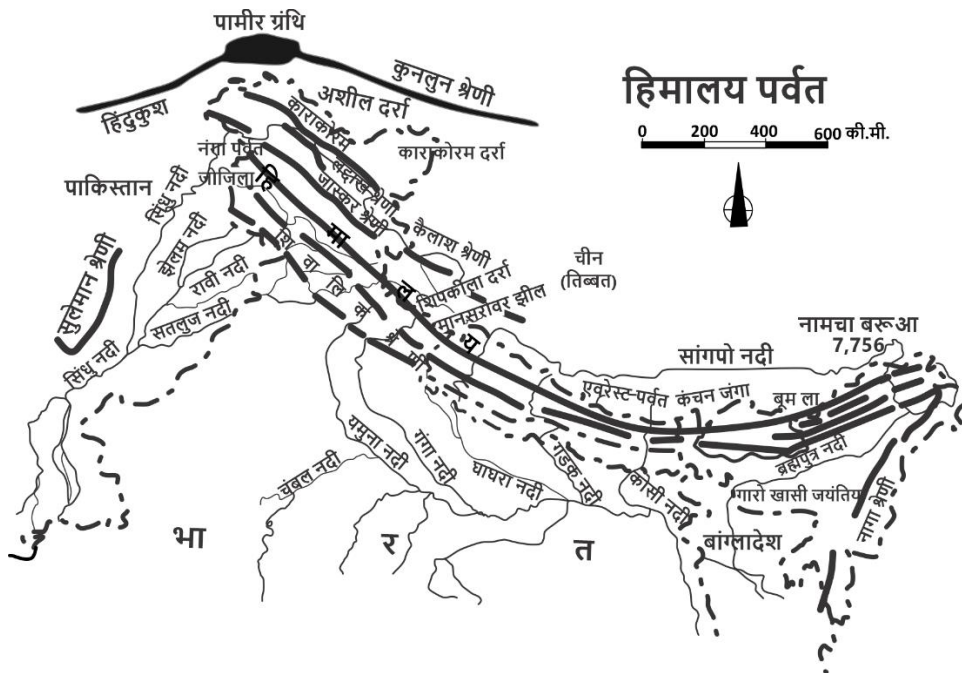
भौतिक विशेषताओं के आधार पर भारत को 6 भौगोलिक भागों में बांटा गया है -

1. उत्तर एवं उत्तरी-पूर्वी पर्वतमाला
2. उत्तरी मैदान

3. तटीय मैदान
4. प्रायद्वीपीय पठार
5. मरुस्थल
6. द्वीप समूह



1. उत्तर एवं उत्तरी-पूर्वी पर्वत



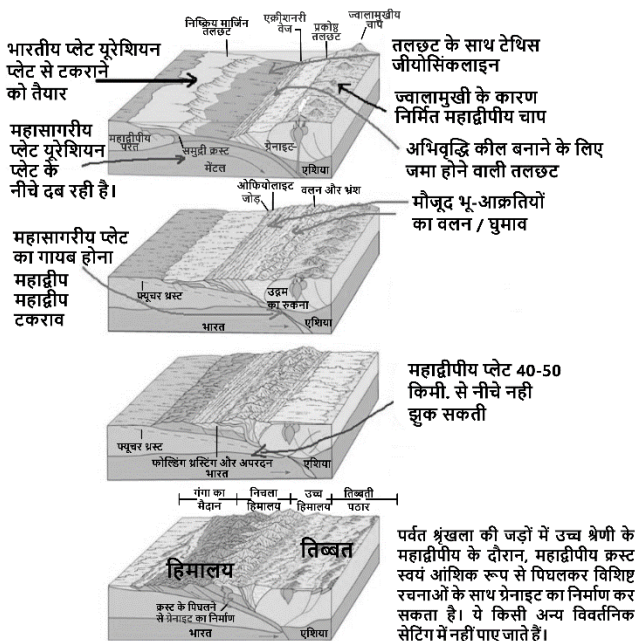
हिमालय पर्वत

- हिमालय विश्व की **सर्वाधिक ऊंची** एवं **युवा** (नवीन) **वलित पर्वत** श्रृंखला हैं।
- भूगर्भीय रूप से, हिमालय युवा, अटढ़ एवं लचीला है क्योंकि इसका **उत्थान एक सतत प्रक्रिया** है।
- यह विशेषता इसे **विश्व के सर्वाधिक भूकंप संभावित क्षेत्रों में से एक** बनाती है
- **लम्बाई** :- हिमालय की लम्बाई पूर्व से पश्चिम दिशा में लगभग 2500 किमी है
- **पश्चिमी छोर** :- नंगा पर्वत (सिंधु नदी के सबसे उत्तरी मोड़ के दक्षिण में स्थित है।)
- **पूर्वी छोर**:- नमचा बरवा (यरलुंग, त्संगपो नदी के मोड़ के पश्चिम में स्थित है)
- **चौड़ाई**: 400 किमी -150 किमी (पश्चिम -पूर्व) ।
- हिमालय की **आकृति** चापाकार अथवा **धनुषाकार** है । हिमालय का **क्षेत्रफल** लगभग **5,00,000 वर्ग किमी.** है ।
- हिमालय अपने **पूर्वी छोर** एवं **पश्चिमी छोर पर दक्षिणवर्ती मोड़** दर्शाता है ।

भौतिक विशेषताएँ

- बहुत **ऊंचे**, **खड़ी ढलान** वाली **दांतेदार चोटियाँ**, **घाटियाँ** और **वृहद् हिमनद**।
- **अपरदन** द्वारा कटी हुई **स्थलाकृति** मिलती है, विशाल नदी घाटियाँ, जटिल भूगर्भिक संरचना और उत्कृष्ट श्रृंखलाएं पाई जाती हैं।
- हिमालय का **बड़ा भाग हिमरेखा के नीचे** आता है।
- **पर्वत निर्माण प्रक्रिया** अभी भी **सक्रिय** है।
- यह अत्यधिक मात्रा में **क्षरण** और **भूस्खलन** होते है।

हिमालय का निर्माण



2 सिद्धांत -

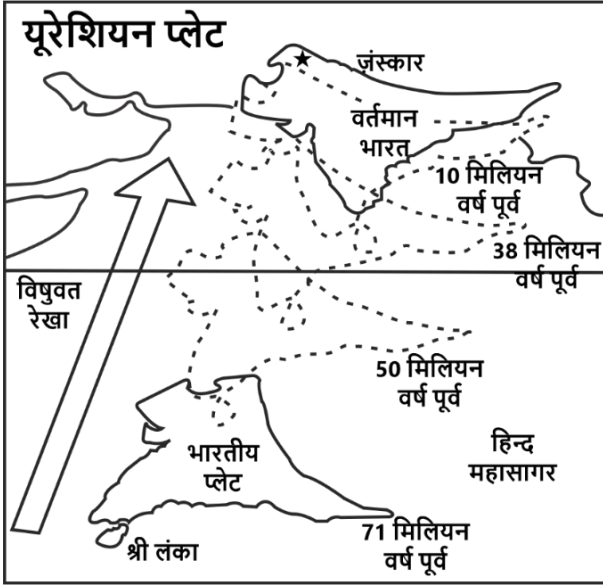
(i) भुसन्नति पर्वतोत्पत्ति सिद्धांत

- 200 मिलियन साल पहले सुपरकॉन्टिनेंट **पैजिया छोटे महाद्वीपों में विघटित** होना शुरू हुआ।
 - **उत्तरी भाग** - लौराटिया या अंगारालैंड
 - **दक्षिणी भाग** - गोंडवानालैंड।
- **लॉरेशिया** और **गोंडवाना लैंड** के बीच एक विशाल **खाली जगह** थी।
- लॉरेशिया और गोंडवानालैंड की **नदियाँ अपरदन** और **गाद** लेकर आई एवं इन्हें **टेथिस** समुद्र में **खाली** कर दिया।
- क्रिटेशियस काल तक लाखों वर्षों तक **निक्षेपण** → टेथिस समुद्र का **तल उठना शुरू** हुआ → हिमालय की **तीन क्रमिक श्रेणियों का निर्माण**।
 - इओसीन काल के दौरान **प्रथम उत्थान** → महान हिमालय का निर्माण।
 - मिओसीन काल के दौरान **द्वितीय उत्थान** → लघु हिमालय का निर्माण
 - प्लियोसीन काल में **तृतीय उत्थान** → शिवालिकों का निर्माण।
- **अरगांड, कोबर** और **सुवेस** (Argand, Kober and Suess) द्वारा **समर्थित** सिद्धांत।

(ii) प्लेट विवर्तनिक सिद्धांत

- लगभग 65-30 मिलियन वर्ष पूर्व, **भारतीय प्लेट यूरेशियन प्लेट** के निकट आकर नीचे की ओर **क्षेपित** (Subduction) होना **प्रारम्भ** हो गयी।
- परिणामस्वरूप, **पार्श्विक संपीडन प्रारम्भ** हुआ और टेथिस सागर में **निक्षेपित अवसादों में वलन** एवं **संकुचन आरम्भ** हुआ ।
- इस झटके से आया **भारी दबाव बल** एक **विशाल पर्वत उत्थान** का कारण बना।
- यूरेशियन प्लेट **2.5 मिलियन वर्ग किमी** का **तिब्बती पठार** (औसत ऊचाई > 4000m) का **निर्माण** करते हुए ऊपर उठी
- लगभग 20 से 30 मिलियन वर्ष पहले **हिमालय पर्वतमाला का उत्थान** शुरू हुआ ।

हिमालय निर्माण के चरण



- यह संकुचन तीन चरणों में हुआ जिसके फलस्वरूप हिमालय की तीन लगभग समानांतर श्रृंखलाओं का निर्माण हुआ।
- इंडियन प्लेट का उत्तरवर्ती संचलन अभी भी जारी है।
- हिमालय पर्वत पर बहिर्जात बलों के साथ-साथ अंतर्जात बल भी कार्यरत हैं।
- विद्वानों का मानना है कि हिमालय की ऊँचाई अब भी बढ़ रही है।
- **प्रथम चरण**
 - 100 मिलियन वर्ष पहले शुरू।
 - क्रीटेशियस अवधि → भारतीय प्लेट रीयूनियन हॉटस्पॉट के ऊपर 10° -40° S के बीच स्थित थी
 - जब प्लेट भूमध्य रेखा के करीब आई तो गति बढ़ गई (14cm /yr) जिसका परिणाम है टेथिस का संकुचन।
- **द्वितीय चरण**
 - 71 मिलियन वर्ष पहले
 - गोंडवाना प्लेट उत्तर पूर्व की ओर खिसकने लगी।
 - उत्तरी पश्चिमी भाग : अरावली श्रृंखला यूरेशियन प्लेट से टकराई।
 - सिंधु-त्संगपो सिवनी क्षेत्र - तिब्बती पठार और भारतीय प्लेट के टकराव के कारण संपीड़न से विवर्तनिक रेखा का निर्माण हुआ।
 - प्लेट का क्षेपण → तिब्बत प्लेट की परत का मुड़ना → उच्च पठार (मोटाई 60km)।
 - सिंधु-त्संगपो सिवनी क्षेत्र का दक्षिणी भाग → दक्षिण की ओर मुर्री अग्रगभीर का निर्माण → शिवालिक अग्रगभीर का निर्माण।

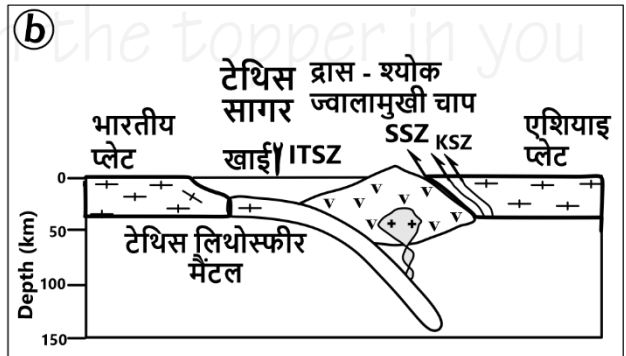
सिवनी क्षेत्र

- तीव्र विकृति का एक रैखिक बेल्ट, जहां अलग-अलग प्लेट विवर्तनिकी, रूपांतरित और पुराभौगोलिक इतिहास वाली अलग-अलग विवर्तनिक इकाइयां एक साथ जुड़ती हैं।

सिंधु-त्संगपो सिवनी क्षेत्र

- एक संपीड़न भ्रंश रेखा है जो सिंधु घाटी से त्संगपो घाटी तक लगभग 3200 किमी तक फैला हुआ है।
- यह उस क्षेत्र को दर्शाता है जहां चट्टानों को तोड़ दिया जाता है या अपरदन कर दिया जाता है एवं पुरापाषाण युग की चट्टानें और प्राचीन चट्टानें भी यहाँ पायी जाती हैं।
- वर्तमान में सिंधु और त्संगपो नदी असंततता के साथ प्रतिलोम फॉल्ट (भ्रंश) रेखा के माध्यम से बहती हैं।

तीसरा चरण



- ओलिगोसीन अवधि : द्रास ज्वालामुखी क्षेत्र बना।
- टेथिस भ्रंश → ज्वालामुखी विस्फोट
- प्लेट का घड़ी की विपरित दिशा में घूर्णन → द्रास प्रमुख धुरी बन गया।
- पश्चिम: दबाव और संपीड़न धीरे-धीरे कम हुआ।
- पूर्व : टेथिस तलछट का निक्षेपण
- द्रास ज्वालामुखी चाप का निर्माण